• Impact Factor – 6.625 • Special Issue - 214 (C)
• January 2020 • ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY
Multidisciplinary International E-Research Journal
PEER REFREED AND INDEXED JOURNAL

हिंदी साहित्य में चित्रित हाशिए का समाज

- कार्यकारी संपादक -
डॉ. जिजाबराव पाटील

- अतिथि संपादक -
डॉ. बी. एन. पाटील

- मुख्य संपादक -
डॉ. धनराज धनगर

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned with OKEN Scanner

– अनुक्रमणिका –

- आंबेडकर विचारधारा और दलित साहित्य
  प्रोफेसर विष्णु सरवदे १
- दलित चेतना और मणिकर्णिका
  रेखा महादेव भांगे ४
- हाशिए का समाज : राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज के दलित उत्थान के संदर्भ में विचार (ग्रामगीता के विशेष परिप्रेक्ष्य में) ६
  प्रा. डॉ. सुनील बापूराव कुलकर्णी
- दलित उत्पिडन
  प्रा. अविनाश बी. अहिरे ९
- मौत ही जीवन का पैगाम 'आदिवासी की मौत'
  प्रा. डॉ. गौतम भाईदास कुवर १२
- ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना
  डॉ. अशोक शामराव मराठे १५
- 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में अभिव्यक्त हाशिए का समाज
  डॉ. शालिनी बलवंतराव वाटाणे १७
- सूरजपाल चौहान की कहानियाँ और आंबेडकरवादी-संघर्ष-चेतना (दलित विमर्श) १९
  डॉ. संजय रणखांबे
- हाशिए पर आदिवासी समाज
  प्रा. डॉ. अमृत खाडपे २२
- हाशिए पर खडे लोगों की दस्तक (संदर्भ : डॉ गौतम कुँवर कृत 'हिन्दी दलित साहित्य की दस्तक') २४
  प्रा. अजित चुनिलाल चव्हाण
- 'छप्पर' उपन्यास में चित्रित दलित विमर्श
  प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे २७
- समकालीन स्त्री विमर्श : सामाजिक परिदृश्य ३०
  डॉ. रेखा गाजरे
- अनामिका के साहित्य में नारी विमर्श ३६
  डॉ. रेखा गाजरे, भावना बडगुजर
- गरिमामय जीवन को तरसरता : किन्नर समाज ४०
  डॉ. क्रांती सोनवणे – बाविस्कर
- प्रेमचंद के साहित्य में दलित विमर्श (सद्‌गती, ठाकुर का कुआँ कहानी के संदर्भ में) ४२
  प्रा. अनुराधा विनोद पवार
- मंजुल भगत के 'अनारो' उपन्यास में नारी विद्रोह ४४
  कु. रजनी शरद इंगळे
- शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य में दलित चेतना ४६
  प्रा. डॉ. विष्णु जी. राठोड
- परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य में हाशिए समाज की झलक ४८
  डॉ. संगीता जगताप
- विजय की ग्रामीण कहानियों में नारी विमर्श ५०
  यमुना एम. पी.
- स्त्री के दाम्पत्य जीवन का संघर्ष : नासिरा शर्मा के 'शाल्मली' उपन्यास के संदर्भ में ५२
  डॉ. शिवाजी सांगोळे
- हाशिए के समाज के अंतर्गत आदिवासी विमर्श (रणेन्द्र जी के 'ग्लोबल गांव के देवता' उपन्यास के संदर्भ में) ५५
  डॉ. मेदिनी श अंजनीकर
- नीरजा माधव कृत -- 'यमदीप' उपन्यास में 'किन्नर' समुदाय के अंतरंग जीवन की मार्मिक गाथा ५७
  प्रा. डॉ. मंजु पु. तरडेजा

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
Jan. 2020
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 214 (C) : हिंदी साहित्य में चित्रित हाशिए का समाज

परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य में हाशिए समाज की झलक

डॉ. संगीता जगताप
विभागाध्यक्षा,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य, महाविद्यालय, चिखलदरा, महाराष्ट्र

आज पुरे विश्व में बच्चों की परवरिश ही सभी समस्याओं की जड़ है। किसी भी देश का विकसित होना उसकी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक नीतियों पर निर्भर होता है। और यहीं नीतियों को कार्यान्वित करने के लिये समाज में समानता होनी चाहिये अपितु भेदभाव विहिनता और समानता शिक्षा के अधिकार कानून मूल तत्व है, लेकिन कानून का उल्लघन करने वालों के लिए कोई दंड का प्रावधान नहीं है। आर्थिक, सामाजिक विषमता ही हाशिए की जड़ है। जब तक हम विचारो से शिक्षित नहीं होंगे (केवल किताबें पढकर नहीं) इस विषमता की जड़े काँटना उतना ही असंभव है। बच्चों में हाशिए की स्थिति को समझने के लिये मैं उसे दो भागों में बाँटना चाहुँगी १) अमीर २) गरीब

माँ के गर्भ से ही बच्चे की यातना का सफर शुरू होता है देश में कितने भी कानून बने कितनी भी अपिल की जाए परंतु स्त्रियों का गर्भावस्था में पुरी तरह से ध्यान नहीं रखा जाता कुछ अज्ञानतावश नहीं रखते या कुछ और लिंगभेद के कारण नहीं रखते परशुराम शुक्ल एक दोहे में कहते है -

''लड़का लड़की में नहीं, फर्क रह गया आज।
अज्ञानी समझें नहीं, समझे सभ्य समाज''
(बाल सत्सई, पृ.१०१)

हमारे देश में स्त्री लिंग को निम्न स्थान दिया जाता है यदि कोई स्त्री लडकियॉ ही जन्मे तो उसकी हालत नर्क से बदतर है। आज जो माँ कल होने वाली सास है अपनी बहु पर ऐसे अत्याचार करके अपनी मानसिकता का शमन करती है क्योंकि इसी त्रासदि का कभी वह भी शिकार थी। गरींबी उसमें अभिशाप बनकर हाशिये को बढ़ावा देती है। घर में खाने को नहीं होता परंतु बच्चों की पैदावार पर कोई प्रतिबंध नहीं होता इससे खाने, रहने, पहनने की स्थिति बिगड जाती है जिससे छोटे घरों में रहना (एक कमरे में) और बच्चे जिस आयु में जो नहीं देखना चाहिये वह माता-पिता के यौंन संबंध देखकर उसका अनुकरन करने लगते है। गरीबी के कारण रहने का ही ठिकाना नहीं तो खाने को कैसे मिलेगा दो वक्त की रोटी के लिए लाले पड़ते है ऐसी, स्थिति में चोरी, डकैती जैसी समस्या उत्पन्न होती है।

परशुराम शुक्ल एक दोहे में यह दुख व्यक्त करते है -

''खाने को रोटी नहीं घर में दो-दो लाल।
फिर भी माता जनेगी बच्चा अगले साल''

भारत के विस प्रतिशत लोग आज भी अधनंगे रहते है रास्तों पर सोते है और जूटन खाकर गुजारा करते है ऐसे में यौन उत्पीडन और अपराध अधिक होते है।

अमीर घरों की स्थिति उससे भी खराब है। पहले भारत में संयुक्त परिवार हुआ करते थे। आज प्रत्येक स्त्री स्वतंत्र रहना चाहती है हम-दो, हमारे-दो इसके अलावा घर में कोई नहीं होता। आधुनिकता का चोला पहने विभिन्न परीवारों मे बच्चों के परवरीश के लिये माता-पिता के पास समय नहीं दोनों अपने-अपने कमों में व्यस्त है उन्हें बच्चों से बात करने उनसे खेलने के लिये समय नहीं अधिकतर घरों में दादा-दादी, नाना-नानी की जगह आया ने ली है जिससे बच्चों में संस्कार नाम मात्र रह गयें है। और जिस घरों में आया संभालती है उन घरों के बहुत से केसेस बाहर आयें है कि वे बच्चों को मारपीट करते है या उन्हें वह बच्चा तकलिफ न दे इसलिये नशें की लत लगाई जाती है ताकि वह सोया ही रहे ऐसे में बच्चे डरते है और मानसिक रूग्न बन गये है। विभक्त परिवारों में अक्सर माँ-बाप और बच्चों के कमरे अलग होते हैं। बच्चा अपने कमरे में क्या कर रहा है यह अभिभावकों को पता नहीं ऐसी हालत में बच्चा मोबाईल, कम्प्यूटर पर ब्ल्यू फिल्मस देखता है, नशा करता है और यही अवस्था आगे बडा अपराध रूप धारण करती है। हाल ही में हैद्राबाद की डॉ. के साथ बलात्कार और जलाकर मार देना ऐसी ही मानसिकता का उदा. है।

''जिस समाज में हो रहा, इन पर अत्याचार।
वह समाज बीमार है आवश्यक उपचार।''[३]

ऐसे बच्चों को संस्कार क्षम और सुधारित कौन शिक्षक, समाज या देश - हमारे देश में शिक्षा प्रणाली की हालत अपाहिज की तरह है शहरों में तो जैसे तैसे ठिक-ठाक स्कूल है पर ग्रामिण क्षेत्र और दूर दराज में आज भी शिक्षा के नाम पर मजाक उडाया जाता है - शिक्षक ही आर्धशिक्षित होगा तो वह इन बच्चों में ज्ञान का दीपक कैसे जलायेगा, बहुत से शिक्षक नशे के हालात में पाठशालाओं में आकर बच्चों पर अत्याचार करते है, मारपीट करते है ऐसे में शिक्षक की आदर्श छवि बच्चों के सामने नहीं आती -

''शिक्षक में वह शक्ति है, दूर करे अज्ञान।
नफरत उनमें जागती, ले बदले की आस।''[४]
''मारपीट से टूटता बच्चों का विश्वास।
नफरत उनमें जागती, ले बदले की आस।''[५]
''ऐसे शिक्षक का सदा, करो घोर अपमाक
कक्षाओं से दूर हर, करे दूसरे काम''

देश की सामाजिक स्थिति आज आत्मकेंद्रित हुई है स्वयं के अलावा सोचने की हमारी मानसिकता नहीं रही हम यह भूल गये है -

''बच्चों की रक्षा करे यह समाज का धर्म।
ईश्वर भी समझो इसे, सबसे पावन कार्य।''[६]

जो समाज पढनेवाली आयु में बच्चों से मजदूरी करवाये भिक माँगने पर मजबूर करवाये वह देश बिमार मानसिकता वाले समाज से भरा है समझ लेना चाहिये।

क्या देश इस बालकों की स्थिति से निपट सकता है। कडे

Scanned with OKEN Scanner

कानून बनने चाहिऐ और उस कानून का दुरूपयोग करनेवालों को कड़ी सजा होनी चाहिए क्योंकि

''बच्चो का आदर करो ये समाज के प्राण।
ये भविष्य में करेंगे, नव समाज निर्माण।''

नशाखोरी, परिवार नियोजन, प्रत्येक परिवार को रहने का ठिकाना और हर हाथ को काम यदि मिला तो यह देश प्रगति करेगा और हर एक व्यक्ति यही गुन-गुनायेगा -

बच्चों के संग खेलकर, मैं बच्चा बन जाऊँ
बच्चों सा अनुभव करू, बचपन का सुख पाऊँ।[७]
''कस्तुरी सा ढूँढता, इधर-उधर मतिमंद।
केवल बच्चों से मिले, सच्चा ब्रहमानंद।''[८]

देश में कडे से कडे कानून बनाकर बच्चों को सुरक्षित किया जाना चाहिये क्योंकि आज का बालक कल का देश का सशक्त नागरिक बनेगा जो देश को चलायेगा और देश को पुरे विश्व में जगमग करेगा।

''बच्चों में होता सदा, निज समाज का नाम।
जो समाज सोणे नहीं, कर डाले वह काम।''
''सकल विश्व को देख कर तुम्हे बताता आज।
बच्चों की उतनी प्रगति, जितना सभ्य समाज''

अगर देश को बचाना है आगे ले जाना है तो परशुराम जी गर्भ में पल रहे अंकुर से लेकर उसके जवान होते तक के सफर को अभिभावकों एवं समाज के सामने उसका रूप रखकर हमें आगाह करते है।

''जिस समाज में हो रहा, इन पर अत्याचार।
वह समाज बीमार है, आवश्यक उपचार।''[९]

अंतत: यही कहूँगी बच्चों से घर स्वर्ग बनता और इस स्वर्ग को महकाने का काम हम सब मिलकर कर सकते हैं। हम बडे. जातिव्यवस्था लिंगभेद में ही जकडे. रहते है परंतु आईये आज बच्चों को हम इस सभी भेदा-भेद से अलिप्त रखकर उनके बचपन को सुरक्षित करें उन्हे सुंदर और स्वस्थ जिंदगी दे ताकि कोई बच्चा बाल सुधार गृह में दाखिल न हो। सड़कों पर भीक न माँगे, बाल मजदूरी न करें। बच्चों की हाशिये की स्थिति में तभी बदलाव होगा जब हम इसे बदलने की जिम्मेदारी हर एक व्यक्ति अपने कंधे पर ले, तो आईये हम सब सबसे पहले शिक्षा ग्रहण कर अपने बच्चों को सुरक्षित रखें हमारी अज्ञानता हमसे सबकुछ करवाती है यह हम भूल जाते हैं-

''बच्चों से लेकर सबक, बदल जायें यदि आप।
साम्यवाद हो विश्व में, शोषणमुक्त समाज!''

संदर्भ सूची :

१. बाल सत्सई - परशुराम शुक्ल
२. सूरज पाना है - परशुराम शुक्ल
३. सतसई काव्य परंपरा और बाल सतसई

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS